RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-07
July-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i07.034

कोविड–19 में संगीत की दशा एवं दिशा

डॉ0 नंन्दिनी मुखर्जी

एसोसिएट प्रोफेसर संगीत वादन (तबला) जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज प्रयागराज

वर्तमान समय में पूरा विश्व कोरोना महामारी से पीड़ित है। 13 मार्च 2020 की बी0बी0सी0 न्यूज (हिन्दी) के अनुसार ''पैनडेमिक (महामारी) उस बीमारी को कहा जाता है जो एक ही समय में दुनिया के अलग–अलग देशों में लोगों में फैल रही हो।''[1] इस बीमारी से बचाव का एक ही रास्ता है 'सामाजिक दूरी'। जिसके कारण पूरे विश्व की गतिविधियों को विराम लग गया है। इससे उत्पन्न निष्क्रियता का वातावरण मानव जीवन के लिये चिन्ताजनक है। सम्पूर्ण समाज एक ऐसी अनिश्चितता की परिधि में है जहाँ उसे भय और अवसाद घेर रहा है। इस भय व चिन्ता युक्त समय ने भी शिक्षा व विकास के सन्दर्भ में नये रास्ते खोजने को हमे प्रेरित किया। हम परम्परागत साधनों के रूक जाने पर विचारों के आदान–प्रदान के नये साधनों का प्रयोग करने में भी प्रयासरत हुए।

प्राचीन काल से आज तक भारतीय संगीत में संगीत की शिक्षा गुरू शिष्य प्रणाली से ही दी जाती रही है परन्तु कोविड–19 के कारण वर्तमान समय में संगीत शिक्षा का स्वरूप बदल गया है। ऑन लाइन शिक्षा में, विद्यार्थी गुरू के सम्मुख नहीं है ऐसे में स्वरों का लगाव, वाद्यों पर हाथ का रख रखाव साज को स्वर में मिलाना, वर्णों का विकास एवं बैठक मुद्रा इत्यादि का सुचारू रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करने में अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। गुरू के सम्मुख बैठकर शिक्षा ग्रहण करना इस विषय की अनिवार्यता है। संगीत मंच कला है और संगीतकार की साधना तभी सफल होती है जब वह दर्शक के समक्ष अपनी प्रस्तुति देता है। वर्तमान में न विद्यार्थी गुरू के सामने बैठकर शिक्षा ग्रहण कर पा रहे हैं और न कलाकार श्रोताओं के सामने प्रदर्शन कर पा रहे हें। संगीत से विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा व्यवसायिक आयोजकों को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऑन लाइन शिक्षण तथा कार्यक्रमों में विद्यार्थी, कलाकार तथा श्रोताओं के बीच बनने वाली तारतम्यता का अभाव रहता है। इस विषम परिस्थिति में भी संगीतज्ञों ने अपनी कला को जीवन्तता प्रदान की।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा संगीत के कलाकारों का व्याख्यान सह प्रदर्शन ऑन लाइन आयोजित किया गया जिसमें संगीत से जुड़े लोगों ने इस अवसाद के समय में घर पर रह कर ही संगीत के कार्यक्रम में भागीदारी की। वर्चुवल वेबिनार का भी आयोजन राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों से तथा भारत के अतिरिक्त विदेशों से भी संगीतज्ञों ने संगीत से जुड़े विषयों पर चर्चा किया। यह कोरोना काल की बड़ी उपलब्धि है जब परिवहन के सभी साधन बन्द थे उस समय आन लाइन सभी को एक मंच पर एकत्र कर सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

वाराणसी की संकट मोचन मन्दिर की 96 साल की संगीत परम्परा को रोक नहीं सका कोरोना। 7 अप्रैल 2020 नव भारत टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार ''वाराणसी के संकट मोचन मन्दिर में हर साल हनुमान जयन्ती के मौके पर होने वाला संगीत समारोह इस बार ऑनलाइन होगा। कोरोना के कारण तमाम कलाकार वीडियो कान्फ्रेसिंग के जरिए अपनी प्रस्तुति देंगे। देश की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी की पहचान बन चुका संकटमोचन संगीत समारोह वैश्विक महामारी कोरोना के चलते पहली बार डिजिटल होने जा रहा है। समारोह में श्रोता सिर्फ और सिर्फ हनुमान जी ही होंगे। देश के नामचीनी कलाकार देश व विदेश में जहाँ भी होंगे वहीं से फेसबुक लाइव के जरिये प्रस्तुति देंगे। मन्दिर में बड़ी स्क्रीन लगाकर हनुमान जी को इसका श्रवण कराया जायेगा।''[2] मन्दिर के महन्त ने इस संक्रमण काल में भी पुरखों की संजोई हुई परम्परा को ध्वस्त नहीं होने दिया और 12 अप्रैल से 17 अप्रैल तक संगीत समारोह का डिजिटल तरीके से आयोजन किया। विषम परिस्थितियों में भी संगीत जगत के 150 से अधिक कलाकारों ने हनुमान जी के चरणों में अपनी हाजिरी लगायी। पं0 जसराज अक्सर कहा करते हैं कि ''यह महज उत्सव नहीं सांगीतिक यज्ञ है, हम यहाँ पारिश्रमिक और मान के लिये नहीं असीम उर्जा' से अपनी साधना को अनुपान देने आते हैं दरअसल किसी और संगीतिक आयोजन से अलग संकटमोचन संगीत समारोह की यह रूहानी रंगत ही इसकी खासियत है।'' वैश्विक महामारी से उत्पन्न अनेक असुविधाओं में भी संकटमोचन संगीत समारोह रूपी यज्ञ का सकुशल सम्पन्न होना यह संगीत के कलाकारों का ईश्वर के प्रति व अपनी कला के प्रति समर्पण की भावना का प्रतिफल है।

परन्तु ऑन लाइन संगीत शिक्षा में अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है नेटवर्क की गड़बड़ी होने पर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विद्यार्थियों को स्वर व ताल की सही तरीके से ध्वनि नहीं समझ में आ पाती। ऑन लाइन शिक्षण में ध्वनि को दूसरे तक पहुँचने में कुछ सेकेण्ड का अन्तर हो जाता है और संगीत लय प्रधान है। अतः लय में व्यवधान आ जाता है। दूसरा संगीत की शिक्षा शिक्षण संस्थानो में दिये जाने का उद्देश्य था समूह में विद्यार्थियों को संगीत का ज्ञान कराना, इससे समूह में बजाने गाने से लय पर नियंत्रण रहता है परन्तु आधुनिक तकनीकी पद्धति से समूह में प्रयोगात्मक कक्षा में लयात्मक ताल मेल में असुविधा उत्पन्न होती है।

संगीत के वेबिनार–सम्मेलन व संगोष्ठी आदि का आयोजन बहुतायत से किया गया। संगीत की किसी भी प्रस्तुति के लिये संगतकार को अहम भूमिका होती है परन्तु समय की नाजुकता के कारण सभी को अपनी प्रस्तुति हेतु इलेक्ट्रानिक वाद्यों का सहारा लेना पड़ा। आन लाइन संगत न हो सकने के कारण इस समय में संगत के कलाकारों को अपनी प्रस्तुति का अवसर कम मिल पाया है। कलाकारों को भी बिना श्रोताओं की वाहवाही के कार्यक्रम में जीवन्तता का अनुभव नहीं होता। रोज़ के भाग दौड़ में अतिरिक्त समय न निकाल पाने के कारण कला साधक चाह कर भी बिना किसी व्यवधान के साधना नहीं कर पा रहा था उसको अपनी कला को निखारने का व आत्म सुख शान्ति का अवसर प्राप्त हुआ। सृजनात्मक कार्य भी इस समय में बहुत हुआ है। डा0 राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल के अनुसार देशभर के तमाम कलाकारों ने इस कोरोना काल में भी जो कुछ दिया है वह आश्चर्य में डालने वाला है। इस लॉकडाउन की अवधि में जितना काव्य, साहित्य व संगीत सृजन हुआ है वह अपने आप में आश्चर्य में डालने वाला है। कोरोना पर ही अनगिनत गीत और लोक गीत रचे गये और कविताएँ भी।''[3]

संगीत से जुड़े सभी वर्ग के लोगों की यह जिम्मेदारी है कि वो अपनी शिक्षा पद्धति की शुद्धता को बनाये रखे प्रायोगिक शिक्षा की बारीकियाँ को अगली पीढ़ी को प्रदान करे तथा शास्त्र ग्रन्थों में वर्णित ज्ञान को जीवन्तता प्रदान कर सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने का अथक प्रयास करें।

सन्दर्भ सूची–

1. 13–4–2020 बी0बी0सी0 न्यूज
2. 7–4–2020 नवभारत टाइम्स
3. संगीत मासिक पत्रिका, अग्रवाल डा0 राजेन्द्र कृष्ण, संगीत कार्यालय हाथरस, पृ0सं0 5, जून 2020।

RRIJM 2015, All Rights Reserved